गिरनार पर्वत की ऐतिहासिकता

-ब्र. सुमत जैन

भगवान नेमिनाथ श्री निर्वाण भूमि है। गिरनार (ऊर्जयन्तगिरि) परम पूज्य आचार्य गिरनार गौरव श्री निर्मल सागरजी महाराज ने वहाँ गिरनार की रक्षा हेतु विशेष कार्य किये हैं।

श्री गिरनार शिखर विख्यात्, कोडि बहत्तर अरू सौ सात।

शंबू प्रद्युम्न कुंवर है भाई, अनुरुद्ध आदि नमू तसु पाय॥

ऊर्जयन्त निगरनार सिद्धक्षेत्र है, निर्वाण क्षेत्र है, मंगल क्षेत्र है, महातीर्थ है। इसी पावन भूमि पर सौधर्म इन्द्र द्वारा समस्त देव परिवार सहित तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ के दीक्षा, ज्ञान, निर्वाण, कल्याणक गरिमापूर्वक मनाये गये। यहीं से शम्भू, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध आदि बहत्तर करोड़ सात सौ महामुनिराजों ने तपश्चरण करके सिद्ध पद प्राप्त किया है।

गिरनार की ही चन्द्रगुफा में महान् आचार्य धरसेन स्वामी ने पुष्पदन्त और भूतबली मुनिराजों को श्रुतज्ञान प्रदान किया था तथा महामन्त्र णमोकार को लिपिबद्ध किया था जिसके परिणामस्वरूप आज हमें 'षट्खण्डागम' नामक महाग्रन्थ उपलब्ध है। अंतिम श्रुत केवली भद्रबाहु स्वामी ने अपने शिष्य सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य सहित गिरनार की वन्दना की थी। महान् आचाय्र 'कुन्द-कुन्द' स्वामी ने तो गिरनार पर्वत पर स्थित श्री अम्बा देवी के मुख से आदि दिगम्बरा कहलवाकर दिगम्बर जैन धर्म की श्रेष्ठता सिद्ध की थी।

कुछ समय पूर्व भगवान नेमिनाथ जी की निर्वाण स्थली पाँचवीं टोंक पर बने चरण चिन्हों को फूलों से ढक कर उन पर रुपये-पैसे चढ़ाने को बाह्य दिखावा किया जाता था तथा चरणों के दर्शन से वंचित होना पड़ता था। ऐसे विकट समय में गिरनार जी में एक महामुनि का अवतार हुआ जिन्होंने गिरनार पर जैन धर्मावलम्बियों की पीड़ा-यातना को हृदय की गहराई से जाना, समझा तथा उनकी पीड़ा दूर करने के लिए गिरनार जी को ही अपना उपासना स्थल बनाया और गिरिराज गिरनार को बचाने का संकल्प किया।

ऐसे महान् आचार्य 108 श्री निर्मल सागरजी महाराज के चरणों में कोटिशः नमन। आचार्य श्री के सतत् समर्पित प्रयास का ही यह परिणाम है कि अब गिरनार वन्दना करने वाले जैन बन्धुओं को कोई उत्पीड़ित नहीं कर सकता। आचार्य श्री की सद्प्रेरणा से निर्वाण लड्डू (चौबीस तीर्थंकरों का) नेमीनाथ जन्म जयंती, महावीर जन्म जयंती, श्रुतपंचमी महोत्सव, वार्षिक महोत्सव आदि धार्मिक कार्यक्रम होते रहते हैं जिनके फलस्वरूप आज जैन बन्धु पूरी स्वतन्त्रतापूर्वक तीर्थराज की वन्दना करते हैं।

गिरनार पर्वत की यात्रा सम्बन्धी जानकारी- तलहटी में गिरनार दरवाजा के अन्दर से सीढ़ी प्रारम्भ हो जाती है। 300-400 सीढ़ी चढ़ने के बाद विश्रामगृह, चाय-पानी आदि की सुविधा मिलती है। रास्ते में माली परब के ऊपर करीब 2800 सीढ़ी चढ़ने के बाद चरणछत्री है जिसमें युगल मूर्तियाँ मिलती हैं जिनका जीर्णोद्धार आचार्य श्री निर्मल सागरजी महारजा द्वारा करवाया गया है।

प्रथम टोंक- यहाँ पर दिगम्बर जैन मंदिर है। जहाँ पर 5 जगह दर्शन हैं तथा एक दिगम्बर धर्मशाला है। उसी के पास राजुलमति माताजी की राजकुमारी अवस्था की मूर्ति एवं नेमीनाथ भगवान के चरण स्थापित हैं। उसके पास ही चरणछत्री है, जिसमें दो युगल मूर्तियाँ शिला में उकेरी हैं और नेमिनाथ भगवान के चरण स्थापित हैं। इस चरणछत्री का जीणोद्धार आचार्य श्री निर्मल सागरजी महाराज द्वारा करवाया गया है। यहाँ से 100 सीढ़ी चढ़ने पर गौमुखी गंगा नामक स्थान आता है जहाँ पर वैष्णव मंदिर के अन्दर 24 भगवान के चरण चिन्ह स्थापित हैं।

द्वितीया टोंक- गौमुखी गंगा से करीब 500 सीढ़ी चढ़ने के बाद 'अम्बा देवी' नाम से प्रसिद्ध नेमीनाथ की शासन देवी अम्बिका देवी का मंदिर स्थित है। मंदिर के ठीक पीछे श्री अनिरुद्ध कुमार जी के चरण हैं जो श्री कृष्ण के सुपुत्र थे। छत्री का निर्माण आचार्य श्री निर्मिल सागरजी महाराज द्वारा करवाया गया।

तीसरी टोंक- अम्बिका देवी मंदिर से करीब 400 सीढ़ी के बाद तीसरी टोंक पर श्री शम्भु कुमारजी के चरण चिन्ह हैं, जहाँ पर टाइल्स लगी हुई छत्री है जिसका जीर्णोद्धार आचार्य श्री निर्मल सागरजी महाराज की प्रेरणा से करवाया गया।

चौथी टोंक- करीब 900 सीढ़ियों के उतार-चढ़ाव के बाद चौथी टोंक का रास्ता है जहाँ पर सीढ़ियाँ नहीं हैं। रास्ता कठिन है। सावधानीपूर्वक जाकर यात्रीगण श्री प्रद्युम्न के चरण चिन्ह के दर्शन करते हैं एवं भगवान नेमीनाथ की मूर्ति शिला में अंकित हैं, जिसके दर्शन से जीवन सफल हो जाता है। तीसरी टोंक की उतार में एक शिला पर दिगम्बर जैन मूर्तियाँ अंकित हैं, जिनका अवश्य ही दर्शन करें। इनका जीर्णोद्धार होना बाकी है।

पाँचवीं टोंक- चौथी टोंक से नीचे आने पर यहाँ से करीब 650 सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद भगवान नेमिनाथ की निर्वाण स्थली है जहाँ पर प्राचीन शिला पर चरण चिन्ह अंकित हैं जिनके पीछे परिक्रमा में भगवान नेमीनाथ की प्राचीन मूर्ति पत्थर की शिला में खुदी हुई मूर्ति विराजमान है जिनकी पूजन-भक्ति, दर्शन से भव-भव के पाप नष्ट हो जाते हैं।

गिरनार तलहटी- श्री दिगम्बर जैनाचार्य श्री निर्मिल सागरजी महाराज की सद्प्रेरणा से श्री दिगमबर जैन मंदिर, निर्मल ज्ञान केन्द्र, मानव बाल विकास शोध संस्थान के अन्तर्गत 'आधुनिक धर्मशाला' जिसमें करीब 50 कमरे हैं। सभागार, भोजनशाला, गुरुकुल, गौशाला आदि स्थित हैं।

इस धर्मशाला में सर्वसुविधायुक्त अटैच रूम हैं जिसमें ठहरने की व्यवस्था है। यहाँ पर विशाल मानस्तम्भयुक्त तीन शिखर वाला मंदिर बना है। समवशरण की रचना तो अद्वितीय है। ग्राउण्ड में त्रिकाल चौबीसी खड्गासन विराजमान हैं। नीचे प्राचीन मूर्तियों से शोभित कमल मंदिर है जो अवर्णनीय है तथा दीवारों पर काँच की कारीगरी अनुपम है।

यहाँ से 1 किमी. बाद तलहटी में आचार्य श्री 108 निर्मल सागरजी महाराज ससंघ विराजमान है। श्री विश्व शान्ति निर्मल ध्यान केन्द्र संस्था के अन्तर्गत एक विशाल मंदिर बना है जिसमें चौबीस खड्गासन मूर्तियाँ विराजमान हैं और 22.5 फुट उत्तुंग भगवान श्री नेमिनाथ जी मूर्ति विराजमान है जो कि चमत्कारिक मूर्ति है। भगवान के बायें कंधे पर शंख का निशाल प्रकट हुआ है जो कि एक अजूबा है। इसके सामने बंडीलाल दिगमबर जैन धर्मशाला एवं मंदिरजी है।